International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

भारतेन्दु युगीन हिंदी नवजागरण के अन्तर्विरोध

मोनिका

शोधार्थी, हिंदी विभाग, एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय कैथल

शोध - आलेख सार

भारतेंदु युगीन नवजागरण के अन्तर्विरोध लंबे दौर के बाद हमारे समक्ष आते है। लेकिन इन अन्तर्विरोधों का साहित्य में ऐतिहासिक महत्व है। औपनिवेशिक दौर से गुजरने वाला हिंदी नवजागरण भारतेंदु युग की अत्यंत विरोधात्मक स्थिति में पनपा। पश्चिमीकरण और भारतीयकरण की रस्साकशी बहुत दिनों तक चलती रही। अन्ततः नवजागरण के अग्रदूतों ने पश्चिमीकरण के विवेक सम्मत परिवेश में अपनी संस्कृति को नए ढंग से संगठित किया जो हिंदी नवजागरण की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। किसी भी युग में अंतर्विरोधों का अ यमन] साहित्य के ऐतिहासिक, वर्तमान व भविष्यात्मक परिदृश्य को अन्तर्वस्तु को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

How to cite this paper: Monica "Contradictions of Bharatendu Era Hindi Renaissance" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.2201-2203, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52267.pdf

IJTSRD52267

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

सांस्कृतिक रूपांतरण, रीतिवादी काव्य, नवजागरण, वैचारिक अन्तर्विरोध, पश्चिमीकरण और भारतीयकरण

भारतेन्द्र युग राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक परिवर्तनों के रूप में आया जो युग के अपने संपूर्ण अन्तर्विरोधों को साथ लिए था जिसमे मौलिक चिन्तन और मध्ययुगीन जीवन मूल्य बहुत दूर तक साथ - साथ चलते नजर आते है। आधुनिक और परम्परा का यह अंतर्द्वन्द्र जीवन के हर क्षेत्र में परिलक्षित हो रहा था। आधुनिक नई चेतना, नये विचार जनमानस तक पहुँच रहे थे। परंपरागत मूल्य और नए विचारों में टकराहट से हमारे देश में सामाजिक, सांस्कृतिक रूपांतरण हो रहा था जिसका व्यापक प्रभाव पूरे देश पर पड़ रहा था हिंदी नवजागरण के व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में राष्ट्रीय जागरण की घटनाएँ घट रही थी। आंदोलन चाहे किसी भी प्रकार का हो वह तत्कालीन सामाजिक स्थितियों, उसमें सक्रिय विभिन्न शक्तियों के टकराव व अन्तर्विरोधों का परिणाम होता है डॉ ० नामवसिंह मानते है कि किसी युग के अन्तविरोधों का अध्ययन तत्कालीन युग को समझने के लिए आवश्यक है " इन्द्रात्मक प्रणाली की बीबी विशेषता है वस्तुओं, व्यक्तियों घटनाओं और विचारों में असंग अथवा अन्तर्विरोधों को पहचानना उदाहरण स्वरूप भक्ति - काव्य के लोकोमुखी यथार्थ और अलौकिकता में आश्रय लेने वाले आदर्श में अन्तर्विरोध था। इस अन्तर्विरोधको समझाने पर स्पष्ट हो सकता है कि प्रकार उनके अलौकिक को लेकर पीछे सम्प्रदाय और मठ खड़े हो गये और लोकोन्मुखी पचाने 19 वीं सदी के सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बल दिया। इस तरह नायक - नायिका भेट परक रीतिवादी काका उद्गम समझने के लिए कृष्ण काम के अन्तर्विरोधों का ज्ञान आवश्यक है। आधुनिक युग में छायावाद के अन्तर्विरोधों ने ही प्रगतिशील सामाजिक यथार्थ भावना को जन्म दिया। असंगतियों अथवा अन्तर्विरोधों के सहारे ही एक युग में पायी जाने वाली अनेक प्रवृत्तियों का कार्य - कारण संबंध स्थापित किया जा सकता था। दो विरोधी शक्तियों के संघर्ष से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव होता है, जिसके फलस्वरूप महा साहित्य का उद्भव होता है। वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारतीय इतिहास का संक्रान्ति काल था जिसमे इतिहास नई कर रहा था। नई अर्थव्यवस्था पाश्चात्यशिक्षा और नवगत जीवन पद्धति के कारण देश की अपनी पहचान खोने लगी थी। इस तरह के अवरोधों ने यहाँ के बुद्धिजीवी वर्ग को नम तरीके से सोचने के लिए बाध्य किया यह पहचान नवीन व प्राचीन के अन्तर्विरोध में की गई " यह परम्परा और काकाल है जिसके गर्भ से नवजागरण की किरण फूटी आप 1857 ई ० से 1947 ई ० केबीन के कालखण्ड पर थोड़ी भी गंभीरता से विचार करें तो आप पाएंगे परस्पर विरोधी ताकते जिनके भीतर भयंकर अन्तविरोध है। बावजूद इसके उनमें साम्राज्यवाद विरोधी एकता कायम हुई। अन्तर्विरोधों से ग्रस्त समाज में होना का जन्म हुआ। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय जनता में उपनिवेदविरोधी एकता कायम हुई इतिहास का सही मायनों में अध्ययन करने और साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए युगीन अन्तर्विरोधों को समझना आवश्यक होता है।

हिंदी नवजागरण एक पारा न होकर अनेक धाराओं का संगम था जिसमें स्वरूपगत भिन्नता भी देखी जा सकती है। सम्पूर्ण हिंदी नवजागरण में एकस्वरता भी नहीं थी। कही इसका स्वरूप व्यापक था तो कही क्षेत्रीयता से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। उस समय के समाज और साहित्य की संरचना स्वरूप में प्रबुद्ध चितकों में वैचारिक मतभेद मिलता है। यह वैचारिक मतभेद दो अलग - अलग विद्वानों की भिन्नता के अलावा एक विद्वान के दो विपरीत व भिन्न विचारों में देखा जा सकता है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक ' भारत - दुर्दशा ' में एक तरफ महारानी विक्टोरिया के शासन की प्रशंसा देखने को मिलती है, दूसरी तरफ ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर तिलमिला देने वाला व्यंग्य भी मिलता है। इस प्रकार रचनाकारों में देशभक्तिराजभक्दिो विरोधी विचारों का एक साथ दिखाई देना हिंदी नवजागरण के अन्तविरोध को प्रकट करता है। प्रो ० रोहिणी अग्रवाल ने लिखा है कि " अन्तर्विरोध अपने युग से सक्रिय वैचारिक मतभेदों का प्रतिनिय मात्र ही तो है प्रगतिशील और प्रतिगामी ताकतों के बीच अनवरत चलती टकराहट अन्तर्विरोध मनन और मंधन की प्रक्रिया को भी तीब्रत करते हैं। एक ही सामाजिक यथार्थ को दो विपरीत ज्याख्याओं को सौभी नजर से देखने का विवेक देते हुए लेकिन देखने का यह विवेक प्रवाह से किनारा कर निःसंग दृष्टि अख्तियार करने के बाद ही आ पाता है अन्यथा अपने - अपने पाले में से कोने का अवसर कौन गवाना चाहेगा। शायद यही वजह है कि नवजागरण के अनविरोध के संग लम्बी दूरी तय करने के बाद दिखने लगे है " हिंदी जागरण के दौर में अनेक विरोधी स्थितियों एक साथ चल रही थी। इन्हीं विरोधी स्थितियों में अतरोधात्मक विचारधारा युक्त साहित्य समाज के गथार्थ को अभिव्यक्त कर रहा था।

19 वीं शताब्दी के परिवर्तनशील वातावरण का प्रभाव हिंदू और मुसलमान दोनों पर हुआ दोनों में एक साथ आधुनिक विचार पैदा हो रहे थे और नये समाज की संरचना का स्वप्न भी निर्मित हो रहा था इस कालखंड में भारत के औद्योगिकरण की चिंता है साथ ही अतीत प्रेम और पुनसल्यानवादी दृष्टि भी विद्यमान है। आधुनिक युग की पृष्ठभूमि में आने वाले समाजसुधारक, दार्शनिक, चिन्तकों व धर्म के व्याख्याताओं की चिन्तनमारा भी पारलौकिक व इहलौकिक दृष्टि के द्न्द् में फंसी हुई नजर आती है। सबकी समानता और राष्ट्रीयता की बात करते - करते हमारे कुछ चितक व मनीषी क्षेत्रीयता के दायरे से नहीं निकल पाते। राष्ट्रीय पहचान और धार्मिक पहचान दोनों के बीच गहरा द्वंद् देखा जा सकता है। ऐतिहासिक कारणों से उत्पन्न इस अन्तर्विरोधात्मक ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है। राजाराम मोहनराम में लक्षित होने वाले अन्तविरोध के संबंध में बच्चन सिंह लिखते है " राजा राममोहन राय का परंपरा से अलगाव अंतविरोधों से भरा पड़ा है। इन्होंने कट्टर हिंदुवादियों से समझौता किया, अंग्रेज उपनिवेदावादियो के सहयोग से परिवर्तन लाने की कोशिश की। लेकिन औपनिवेशिक पराधीनता बुर्जुआ आधुनिकता के मार्ग से में दीवार बनकर खड़ी भी ऐसी में जो भी आधुनिकता आयी, वह आधुनिकता का ' करिकेचर थी। उन्होंने प्रश्न उठाया है कि तत्कालीन औपनिवेशक अर्थव्यवस्था औद्योगिकरण उत्पादन के ठहराव किसान विद्रोह किसानों के शोषण वर्गों के बीच की बढ़ती हुई खाई के संदर्भ में इस आधुनिकता से क्या महत्त्वपूर्ण जुड़ता है जिसे महत्वपूर्ण कहा जाए तत्कालीन आधुनिकीकरण का पुराने धार्मिक, संस्कारी, रीति - नीतियों, संघटनाओं के साथ कोई मेल नहीं बन पाया। जिसके फलस्वरूप समाज में पुराने संस्कारों व नए गया के बीच सामंजस्म को आवश्यकता को महसूस किया गया। सामंजस्य मूलक चेतना ही यह रास्ता था जिससे भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को खत्म किया जा सकता था। " मध्यकाल में नए परिवेश के फलस्वरूप जाति प्रथा, सुआचूत बाह्याम्बर आदि के विरोध में आदोलन उठ खड़ा हुआ था। मुसलमानों के प्रतिष्ठित हो जाने पर इस आन्दोलन के माध्यम से सामंजस्य का प्रयास दिखाई पड़ा। किंतु नए युग में नए प्रकार के सामंजस्य की जरूरत पड़ी। मध्यकाल का सामंजस्य भावनामूलक था उस काल के बहुत से भक्त सन्ा अन्तर्विरोधों के भी शिकार थे। अब भावना से काम नहीं चल सकता था। भावना के स्थान पर तर्क विवेक और बुद्धि से काम लेना अनिवार्य हो गया था। कहना न होगा कि ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज और आर्यसमाज की मान्यताएँ बहुत कुछ बुद्धि - विवेक और तर्क पर ही आधारित है। " इतिहास के सभी कालों में अन्तर्विरोधों का सृजन समय विशेष की पैदाइश होता है इसलिए प्रत्येक काल के अपने अन्तर्विरोध होत है। मध्यकाल में भावनामूलक अन्तर्विरोध तो आधुनिक काल में अन्तर्विरोधों का स्वरूप विचारमूलक हो गया। युगीन रचनाकारों व समाजसुधारकों ने युग को संवेदनाओं को आत्मसात करके आम जनता के लिए एक सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनकारी वातावरण तैयार करने का साहसिक कार्य किया। अंतर्विरोधग्रस्त मानसिकता वाले समाज में यह कार्य और भी जटिल हो गया होगा। एक तरफ औपनिवेशिक शक्ति से टक्कर लेना दूसरी तरफ सदियों से चले आते समाज के सामन्ती कुसंस्कारों से भी मोर्चा लेना था। दूसरा कार्य कठिन था क्योंकि सामंती सोच वाले भारतीय नवीनता को आत्मसात करने के लिए तैयार नहीं थे उनके रूद संस्कारों को छूना उसके धर्म को चुनौती देने के समान था। प्रो ० मनमोहन चतुर्वेदी के शब्दों में " हिंदी नवजागरण के पुरोधा आधुनिकीकरण की परियोजना के लिए तो पर्याप्त संवेदनशील है, लेकिन ' सामन्तविरोध ' उनका प्रमुख लक्ष्य नहीं है। नए आधुनिक सामाजिक समूहों के निर्माण, विस्तार और सुदृढीकरण में तो उनकी दिलचस्पी है और इसके लिए जितना ' समाज संशोधन आधुनिक भाषा और गतिशीलता चाहिए उसमें भी, लेकिन विडम्बना यह है कि उसके लिए सामन्तवाद से जितना लड़ना पड़ता है उतनी ही उसकी मदद की भी जरूरत पड़ती है। इस तरह भारतीय समाज में व्याप्त सामंती कुसंस्कारों से मुठभेड़ करने वाले समाज सुधारक अपनी शक्ति को साम्राज्यवाद के विरोध में संपूर्णता से नहीं लगा पाए।

नवजागरणकालीन अंतर्विरोधी भाव नई दिशा नीति एवं भाषा में भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। इस दौर में अदालती भाषा व शिक्षा के लिए माध्यम भाषा के चुनाव की स्थिति अत्यन्त पूर्ण है। कम्पनी सरकार ने 1813 में एक एक्ट बनाकर संस्कृत फारसी की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। 1836 ई ० में अदालतों को देशी भाषा के प्रयोग का निर्देश दिया गया। 1837 में उर्दू को अदालतों की भाषा घोषित कर दिया गया। दूसरी तरफ राजाराम मोहन राय अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में थे अंग्रेजी शिक्षा राष्ट्रीयता को जाग्रत करने में सहायक भी रही। भारत में चलने वाला यह हिंदी व अंग्रेजी भाषाओं का झगड़ा विरोधात्मक स्थिति पैदा करता हुआ साम्राज्यवादी शक्ति को और बढ़ावा देता गया। हिंदुओं और मुसलमानों ने भाषायी झगड़े को अपने - अपने धर्म से जोड़कर देखा " भाषा और लिपि का मुद्रा धर्म से

जुड़ गया था और साम्प्रदायिक विभाजन का सक्षम औजार बन गया था। तीखी विद्वेसपूर्ण स्पर्धा इसकी संचालिका शक्ति बन गई। अंग्रेजों की फूट डालो राज करो ' की नीति के तहत चलने वाला यह विवाद देश को दो भागों में बाटकर ही शांत हुआ।

नवजागरण चिंतकों में स्त्री शिक्षा के प्रश्न को लेकर भी वैचारिक अंतर्विरोधी देखा जा सकता है एक ओर तो भारतेंदु जहाँ लड़कियों की शिक्षा की पैरवी करते हैं वहीं दूसरी और उसके लिए प्रेमसागर पढ़ने की मनाही करते हैं। राजाराम मोहनराय द्वारा चलाए गए विधवा विवाह युग के साहित्य में सुनी जा सकती है लेकिन ज्योतिसाफुले और सावित्री बाई फुले द्वारा शिक्षा और सुधार के आंदोलनों पर साहित्यकारों का ध्यान कम ही गया। बलिया में होने वाली सभा में भारत वर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है " निबंध में भारतेंदु कहते है लड़कियों को भी पढ़ाईए किन्तु उस चाल से नहीं जैसे आजकल पढ़ाई जाती है जिससे उपकार के बदले बुराई होती है ऐसी चाल से उनको शिक्षा दीजिए कि वह अपना देश और कुछ धर्म सीखे पति की भक्ति करे और लड़को को सहज में शिक्षा दे। इस प्रकार स्त्रियों के संदर्भ में एक तरफा नैतिकताबाद दिखाई पड़ता है। नवजागरण काल में पुरुष सुधारकों ने स्त्री को केन्द्र में रखकर सुधार करने चाहे लेकिन स्त्री स्वतंत्रता की उनको अपनी समझ को एक सीमा की स्त्री को सामाजिक बंधनों से आजादी खासकर भारत में एक कठिन मामला है, ज्यादातर विचारक सुधारक स्त्रियों की परंपरागत छवि को ही पोषित कर रहे थे। वे स्वयं तो स्वतंत्रता एवं आधुनिकता के मुरीद थे किंतु स्त्रियों की स्वतंत्रता व आधुनिकता को लेकर गहरे द्वंद्र में थे। इन सब अंतर्विरोधों के बावजूद स्त्री शिक्षा का पुनरुत्थान भारतेन्दु युग में हुआ। नयी शिक्षा नीति से जर्जरत ' स्त्री शिक्षा को बल मिला जिसके परिणाम वर्तमान में सुद एवं मजबूत ' स्त्री - छवि'को देखने में मिल रहे है। आज स्त्री की में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। अब वह अवला, असहाय और नहीं है। शिक्षा के प्रकाश से उनमें चेतना और विवेक पैदा हुआ आज की नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्वामिनी है उसे क्षेत्र में पुरुष के समकता दर्जा प्राप्त है। नि:संदेह भारतेंदु युगीन नवजागरण के अन्तर्विरोध लंबे दौर के बाद हमारे समझ आते है लेकिन इन अन्तर्विरोधों का साहित्य में ऐतिहासिक महत्व है। औपनिवेशिक दौर से गुजरने वाला हिंदी नवजागरण भारतेषु घुग की अत्यंत विरोध स्थिति में अन्तत : नवजागरण के पश्चिमीकरण और भारतीयकरण की रस्साकशी बहुत दिनों तक चलती रही। अग्रदूत ने पश्चिमीकरण के किसम्मत परिवेश में अपनी संस्कृति को नए ढंग ययन से संगठित किया जो हिंदी नवजागरण की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। किसी भी युग में अंतर्विरोधों का साहित्य के ऐतिहासिक, वर्तमान व भविष्यात्मक परिदृश्य की अन्तर्वस्तु को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

संदर्भ

[1] नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना पू० 142

[2] कर्मेन्द्र शिशिर, नवजागरण और संस्कृति, पृ० 28

[3] रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन स्वप्न और संकल्प पू० 46

[4] बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास 282

[5] बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास 27

[6] मनमोहन चतुर्वेदी, परंपरा, आलोचना और हिंदी नवजागरण 11

[7] उपस्वित्, पृ० 9

[8] सम्पादक - कमला प्रसाद प्रधान नामवर सिंह, भारतेंदु प्रतिनिधि संकलन, पृ० १०७.